माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिनांक–19.05.2015 को स्व० वटुकेश्वर दत्त जी के प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम में दिये गये भाषण का ट्रांसक्रिप्सन

बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति आदरणीय अवधेश नारायण सिंह जी, महान क्रांतिकारी स्व० वटुकेश्वर दत्त जी के पुत्री आदरणीया भारती वासकी जी, विधान परिषद् के उप सभापति जनाब सलीम परवेज साहब जी बिहार सरकार के माननीय मंत्रीगण सर्वश्री राम लषन राम रमण जी श्रवण कुमार जी बिहार विधान परिषद के वरिष्ठ सदस्य आदरणीय केदार नाथ पाण्डेय जी, कार्यक्रम के संचालनकर्ता विधान परिषद् के माननीय सदस्य, विधायक श्री राम बचन राय जी विधान परिषद् के माननीय सदस्यगण, श्री विजय कुमार जी, सुप्रसन्न प्रसाद यादव जी। सम्मानित नेतागण जनप्रतिनिधिगण विशिष्ठ अतिथिगण बिहार विधान परिषद् में कार्यरत सभी अधिकारीगण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधिगण, देवियो एवं सज्जनों।

आज हम सबों के लिए बहुत ही गौरव का दिन है कि आज महानक्रांतिकारी, स्वतंत्रता संग्राम के वीर योद्धा स्व० वटुकेश्वर दत्त जी के प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला और यह हम सब लोगों का परम सौभाग्य है कि उनकी पुत्री भारती वासकी जी हमलोगों के बीच इस कार्यक्रम में उपस्थित हैं। हमलोगो को तो वटुकेश्वर दत्त जी से मिलने का या, उनको देखने का तो अवसर प्राप्त नहीं हो सका लेकिन आज इस कार्यक्रम में उनकी एक मात्र सुपुत्री से मिलने का अवसर मिला।

वटुकेश्वर दत्त जी का छात्र जीवन में ही जो देश के प्रति लगाव उत्पन्न हुआ और जो क्रांतिकारियों का मार्ग था उसको उन्होने अपना लिया और इतने कम उम्र में उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में एक एतिहासिक भूमिका निभाई और आज जब वो सभापति महोदय कह रहे थे कि एक उपयुक्त स्थल पर उनकी प्रतिमा लगायी गयी है। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जो सात छात्र शहीद हुए थे उनकी तस्वीर या मूर्त्ति लगी हुई है और ठीक उसके बगल में स्वर्गीय वटुकेश्वर दत्त जी की प्रतिमा स्थापित की गयी है। अब तो ये क्रांतिकारियों का स्थल हो गया है और इस स्थल का चयन हो गया है और भारती वासकी जी जक्कनपुर में रहती है तो एक तरह से उनके घर के पास ही प्रतिमा का स्थापना हुआ है अब तो यहां मूर्ति लगा है शहीद स्मारक पर लोग आते रहते हैं और क्रांतिकारियों के बारे में जानते रहते हैं। और उन्हे बगल में वटुकेश्वर दत्त जी के प्रतिमा के समक्ष आकर अपनी श्रद्धानिवेदित करने का अवसर मिलेगा तो ये बहुत ही उपयुक्त स्थल का चयन हुआ है और बिहार विधान परिषद में इस बात का निर्णय हुआ था, जब सौवां साल हम लोगों ने मनाया था बिहार विधान परिषद् का तो उसी समय यह तय हुआ था, कि क्या–क्या काम होना चाहिए। चूँकि बिहार विधान परिषद के लिए इससे गर्व/गौरव की बात क्या हो सकता है स्वर्गीय बटुकेश्वर दत्त जी बिहार विधान परिषद के सदस्य रहे है। बिहार विधान परिषद के सदस्यों में इनका नाम भी शामिल है हम तो सब लोग बिहार विधान परिषद के सदस्य बैठे हुए हैं पूर्व सदस्य भी बैठे हुए है। यह तो एक और गौरव की बात हो गयी कि हमलोग उसी सदन के सदस्य है जिसमें वटुकेश्वर दत्त भी थे तो ये उचित फैसला हुआ। विधान परिषद् के इनिशियेटिव के रूप यह सारा कार्य हुआ और उस समय के सभापति थे स्व० ताराकान्त झा जी और उस समय यह सब फैसला हुआ

और उसके बाद अवधेश बाबू ने इस काम को आगे बढ़ाया और उसको मूर्त रूप प्रदान किया। देखिये सब बधाई के पात्र है .... आने वाली पीढ़ी पीढ़ी दर पीढ़ी इनके कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी। तो एक बहुत सुन्दर कार्य हुआ है और हम सब मैंने शुरू में ही कहा कि हम सब अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे है इस कार्यक्रम में शामिल होकर। शामिल होने का अवसर मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। मात्र सात महीने के लिए विधान परिषद् के सदस्य रहे लेकिन इन्होंने बहुत युवा अवस्था में ही स्वभाविक है छात्र जीवन में क्रांतिकारी आदोलन से प्रभावित हुए, भगत सिंह जी के अनन्य सहयोगी बने और उनकी भूमिका के बारे में सबलोग जानते हैं, पूर्व परिचित है। सेन्ट्रल एसेवली पर जो बम फेका गया उसमें वो जिन्होंने वो कार्य किया भगत सिंह जी के साथ मिलकर, और इनके लिए कारागार में रहकर गांधी जी ने पहल की इनके रिहाई के लिए या फिर 46 के आंदोन में भी शरीक हुए और बिहार के साथ इनका अनन्य रिश्ता बना और तबसे ये भले ही इनके पिता जी और इनके पूर्वज पश्चिम बगाल के रहने वाले थे या इनकी शिक्षा दीक्षा और इनका लालन पालन कानपुर में हुआ लेकिन जब बिहार आये तो तबसे तो बिहार के ही होकर रह गये वेसे तो ऐसे महान विभूतियों को किसी राज्य के सीमा में बांधना उचित नहीं है लेकिन ये तो हम लोगों का स्वार्थ है कि हम अपने बिहार के गौरव को और बढाने के लिए सोचते हैं या फिर एक बिहारी और तो वेसे ही एक शानदार बिहारी बटुकेश्वर दत्त जी रहे और उसी रूप में उन्होंने इस दुनियाँ को अलविदा कहा। और हम सब लोगों को बहुत दुःखद अनुभूति हुई, हो रही है और मेरा तो पक्का विश्वास है कि आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी इनसे प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी। हम सब लोगों का ये दायित्व बनता है और उनकी सुपुत्री यहां मौजूद ही हैं तो

विधान परिषद् की तरफ से उनकी जीवनी भी एक प्रकाशित की जाये और राम बचन राय जी यहां मौजूद है। और उनका पूरा प्रचार–प्रसार होना चाहिए क्योंकि हमलोग थोड़ा इन चीजों में पिछड़ जाते हैं। हालांकि पीढ़ी दर पीढ़ी उनको याद रखेगी तो इसको जितने बड़े पैमाने पर दुनिया में पहुंचाने के लिए पूरा इंतजाम हो जाये यही हम कहेंगे शिक्षा विभाग को। वैसे तो हमलोग भी छात्र जीवन में या जब से है वटुकेश्वर दत्त का नाम सुनते है लेकिन इनके जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में और जितना भी लिखा जायेगा। इसके तहत जीवनी लिखना, इसके हर पहलू की व्याख्या करके इन बातों को कहना लिखना और आने वाले पीढ़ी के लिए ये सब एक प्रेरणा देने वाले दस्तावेज होंगे। तो जितना भी हमलोग करे उतना अच्छा है। तो यह खुशी की बात है कि विधान परिषद् के शताब्दी समारोह के दौरान जो निर्णय लिया गया आज उसको मूर्त रूप प्रदान किया गया है। यह एक खुशी की बात है। तो इन्ही शब्दों के साथ मैं महान क्रांतिकारी स्व० वटुकेश्वर दत्त जी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति आदरणीय अवधेश नाराण सिंह जी के प्रति अभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने इस असवर पर मुझे भी आमंत्रित किया और आप सब को मैं धन्यबाद देता हूं कि इस कार्यक्रम में आप सब लोग शरीक हुए। जय हिन्द।